प्रातः क्लास 24/11/68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। शिवभगवानुवाचः शिवभगवानुवाच कहने से यह भी नहीं समझना है कोई मनुष्य शिव होता होता है। भगवानुवाच कहने वाला कौन है यह भी नहीं समझते हैं। यह तुम बच्चे समझ सकते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। क्योंकि यह पाठशाला है। बच्चों को पढ़ना है। बहुत हैं जो पढ़कर फिर पढ़ाते भी हैं। दिन प्रति दिन पढ़ाई बड़ी सूक्ष्म, गुह्य होते जाते हैं। अभी तुम जानते हो बाप बीजरूप है। और चैतन्य है। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप भानाबाप है। वह छोटे2 झाड़ होते हैं जो छोटे2 हद की रचना करते हैं। बेहद के मनुष्य सृष्टि का बीज तो एक ही है। और वह बीज ऊपर में है। बीज ऊपर में होने कारण उनकी महिमा गाई जाती है। वह ज्ञान का सागर है। अभी तुम ऐसे नहीं कहेंगे वह ऊपर में है। अभी तो यहां है। तुम्हारी बुद्धि अभी ऊपर नहीं जाती है। तुम जानते हो बाबा जो सारा कल्प ऊपर में रहते हैं सिर्फ एक ही बार पिछाड़ी में आते हैं। पिछाड़ी में जो आत्माएं आती हैं वह भी आते ही हैं दुःखरूपी झाड़ में। बाप तो दुःख सुख से न्यारा है। उनके लिये ऐसे नहीं कहेंगे कि दुःख की दुनिया में आते हैं। उनको तो दुःख की लेस भी नहीं आती। जैसे प्लेग होती है या कोई ऐसी बिमारी होती है वा फैलने वाली होती है तो मनुष्य डर कर भागते हैं। डाक्टर लोग नहीं डरते हैं। डाक्टर तो दवाई करते हैं। इस समय सारी दुनिया में बिमारी है। उस बिमारी को निकालने लिये अविनाशी सर्जन आते हैं। वह आने लिये डरते नहीं हैं। वह आते ही हैं सभी की दवाई करने। उनको कोई बिमारी नहीं लगती। वह है ही निराकार। उनको कोई लेप-छेप नहीं लगता। बाप तो और ही हंसी से कहते हैं मेरी तुमने बहुत ग्लानी की है। फिर कृष्णकी भी ग्लानी की है, राम की भी ग्लानी की है। बाकी ब्रह्मा की इतनी ग्लानी नहीं है। उनकी भी होनी चाहिए ना। तो जब से बाप ने इनमें प्रवेशकिया है तो उनको भी कितनी गालियां मिलती हैं। कितनी घृणा करते हैं अखबारों द्वारा। पिछाड़ी में इनको भी गाली दिलाई। मुझे तो दी है। अब मैंने इनमें प्रवेश किया है तो तुम भी खाओ गाली। खूब गालियां मिलती रहती हैं प्रैक्टीकल में। औरों के लिये शास्त्रों में लिख दिया है। इनको तो प्रैक्टीकल में सम्मुख बहुत गालियां देते हैं। बाप कहते हैं ऐसे तो कब तुमको कोई गाली देते नहीं थे। तुम्हारी तो महिमा होती थी। अभी मैंने प्रवेश किया है, मुझे तो गाली दे ही नहीं सकते। तो तुमको देते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है जो इनको गालियां देते हैं। नहीं तो बहुत पापात्मा तमोप्रधान कैसे बने। साधु सन्यासी आदि भी न जानने कारण गाली देते हैं इनमें भगवान कैसे आ सकता। भगवान तो श्रीकृष्ण है। अभी कृष्ण तो भगवान हो न सके। वह समझते हैं भगवान कृष्ण में आते हैं। अभी कृष्ण ज्ञान का सागर है यह तो कभी भी कोई की बुद्धि में आ न सके। कृष्ण अगर ज्ञान का सागर होता तो नारायण भी होता। ना० द्वारा सारी प्रजा में भी यह ज्ञान होता। परन्तु वह तो ज्ञान से पर पाया हुआ है। वहां सतयुग में यह ज्ञान साथ में नहीं चलेगा। यह है ही कलियुग अन्त और सतयुग के आदि के संगम की पढ़ाई। यह पढ़ाई न सतयुग में, न कलियुग में मिलती है। सयाने सन्धु जो हैं वह समझते हैं बराबर अभी कलियुग का अन्त है। कई अज्ञानी मनुष्य तो तुम्हारे पर भी हंसी करते हैं। यह भी बच्चों को समझाया है अज्ञानी आत्मा बनती है, आत्मा में ज्ञान है तो उनको ज्ञानी कहा जाता है। बाप तो है ही परम-आत्मा। पूजा भी करते हैं। तो शिव परमात्मायनमः कहते हैं। अभी तुम जानते हो वह परम आत्मा है, सभी आत्माओं का बाप है। उनको ही सभी याद करते हैं बाबा रहम करो। और हमको लिबरेट करो। हमारी इस मेहनत का हमको फल दो। तुमको बाप लिबरेट भी करते हैं भक्ति का फल भी देते हैं। भक्ति का फल है ज्ञान। जिससे सदगति होती है। सदगति पहले2 तुम्हारी होती है। विस्तार से समझने की दरकार नहीं रहती। तो इस ड्रामा के चक्र को अच्छी रीत जानते हो। सतयुग में तो तुम ही सतोप्रधान। फिर थोड़ी2 कला कम होती है। वहां आत्माओं में रोशनी जास्ती होती है। अर्थात सम्पूर्ण पवित्र सतोप्रधान है। इतना सुख भी रहता है। कहते भी हैं फलाना स्वर्ग पधारा। ऐसे कब नहीं कहेंगे त्रेता में, रामराज्य में गया। सभी को स्वर्ग याद रहता -

है। यह लोग भी कहते हैं पैराडाईज, हैविन। तुम त्रेता में जाने का भी दिल नहीं होती। क्योंकि वह फिर तो $\frac{1}{4}$ पुराना हो जावेगा ना। बाबा अभी बेहद का घर स्थापन कराये रहे हैं। करन करावनहार है ना। तो स्वर्ग की स्थापना कराये रहे हैं। हमेशा शुभ बोलना चाहिए। इसलिये स्वर्ग ही नाम लेते हैं। त्रेता का तो कब कोई नाम लेंगे ही नहीं। जैसे शिव को शंकर को दिलाये दिया है वैसे ही सतयुग त्रेता को भी दिलाकर स्वर्ग कह देते हैं। बाप बैठ समझाते हैं समीपस्थ भी करते हैं कि हम नईदुनिया नयेघर में जावेंगे। त्रेता भी पुराना घर होता है। उनको नया नहीं कहेंगे। पुराने घर में क्यों आते हैं वह भी तुम जानते हो। अच्छी रीत न पढ़ने से फिर देरी से आते हैं। वन्डरफुल वर्ल्ड नई दुनिया को कहेंगे। न कि त्रेता को। तो इसलिये बाप कहते हैं अच्छी रीत पुरुषार्थ करो। देही अभिमानी बनने में ही मेहनत लगती है। भल ज्ञान अच्छा है परन्तु देहअभिमान बहुत है। तो नतीजा क्या होगा ऊंच पद मिल न सके। कोई को जोर पूरा लगेगा ही नहीं। कोई2 मुख से कहते हैं बाबा आप याद नहीं पड़ते हो। तब किसको याद करते हो? परम आत्मा, बाप तो एक ही है। बाकी मनुष्य तो हैं ढेर। जैसे जलाने का किचड़ा ढेर इकट्ठा हो जाता है ना। तो किचड़े को इकट्ठा कर फिर आग दी जाती है। यह भी बेहद के किचड़ा का ढेर हो गया है। इस किचड़े को खत्म करने लिये इस सृष्टि पर यज्ञ रचा हुआ है। यह यज्ञ कल्प2 भारत में ही रचा जाता है। इस गीता ज्ञान यज्ञ का किसको भी पता नहीं। कहां यह यज्ञ रचा हुआ था उसकी निशानी भी जरूर चाहिए ना। जैसे यह भी तुमको याद है फलाने समय ल0ना0 का राज्य था। फलाने समय राम का राज्य था। फिर द्वापर से रावणराज्य शुरू हुआ यह निशानियां हैं। आगे तुम तो कुछ भी नहीं जानते थे। दीपमाला पर बहुतमूर्ति बनाकर फिर घर में ले आये पूजा करते हैं। नवरात्रि पर कितनी देवियों की पूजा होती है। आसाम के तरफ खास कारीगर होते हैं यह बनाने वाले। मनुष्यों की कितनी भावना बैठ जाती है। जब डूबोने लिये ले जाते हैं तो रोते हैं। अभी तुम हंसी करेंगे यह गुड़िडयां बनाकर पूजा की दक्षिणा दी, फिर डूबो देते। बड़े2 आदमी बहुत कुछ देते हैं बनाने वालों को, ब्राह्मणों को। परन्तु वह लोग आक्युपेशन को तो जानते ही नहीं। गुड़िडयों की पूजा हुई ना। यह सभी है भक्ति मार्ग। तब बाप कहते हैं तुमको इतनाधनवान बनाया। तुम स्वर्ग के मालिक थे फिर इतना धन कहां किया? अभी भी तुम समझते हो स्वर्ग बरोबर था। अभी फिर बाप स्थापन कर रहे हैं गोया बाप ने तिरी पर बहिश्त लाया है। यह समझ की बात है। हम अपना राज्य स्थापनकर रहे हैं। श्री मत पर। बाप ने हमको बहुत बड़ा कारीगर बनाया है। तुम्हारे जैसा कारीगर हो नहीं सकता। बाप डायरेक्शन देते हैं स्वर्ग की स्थापना करो। तो सारी दुनिया पवित्र बन जावेगी। यह सारी धरती भी पवित्र बननी है। जितना याद में रहेंगे उतना ही पावन बनेंगे। दुनिया भी सतोप्रधान बनेगी। सर्वशक्तिवान बापके बच्चे बने हो तो बाप से तुमको कितनी ताकत देते हैं, मुझे याद करते2 तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर तुमको सृष्टि भी सतोप्रधान चाहिए। तो जरूर तमोप्रधान सृष्टि का विनाश हो जावेगा। स्थापना और विनाश यह भी जरूर होना है। कल्प2 ऐसे होता रहता है। सारी सृष्टि गोल्डेन एज कहलाई जाती है। अभी है आयरनएजेड। तुम्हारे सतोप्रधान सृष्टि तो जरूर चाहिए। तुम 5तत्वों को भी सतोप्रधान बनाते हो। देहीअभिमानी बनने से तुम भारत की इतनी सेवा करते हो। कोई लिखते हैं बाबा हम देहीअभिमानी बन नहीं सकते हैं। तो समझना चाहिए तुम इतना ऊंच पद नहीं पा सकते हो। महारथियों से हां माया जोर से लड़ती है। लिखते हैं बाबा माया जोर से लड़ती है। देह अभिमान आ जाता है। यह नहीं समझते हैं जबहम देही बनेंगे तब तो ही योगबल से विश्व की मालिक बनेंगे। गायन भी है आत्माएं परमात्मा अलग रहे बहुकाल... वह तो लाखों वर्ष कह देते। अज्ञान अंधेरे में हैं ना। अज्ञानी को अंधा, ज्ञानी को सूजा कहा जाता है। अज्ञानी चारों तरफ फेरा लगाते रहते हैं। कुछ भी पता नहीं पड़ता। रचयिता और रचना को जानते ही नहीं। यह भी खेल है। ऋषि मुनि आदि भी देते2 कहते गये। वह तो हैं हठयोगी। तुम हो राजऋषि। अभी वजन में किसका तरफ भारी होगा। तुम्हारा राजयोग के तरफ जरूर भारी हो जावेगा। वह हठयोग का हल्का हो जावेगा। क्योंकि—

वह पोला हो पोला है। उसने आमदनी अर्थात प्राप्ती, ताकतकुछ है नहीं। तुम्हारे तो इस राजयोग से बहुत आमदनी होती है। तुम कितने सालवैन्ट बनते हो। वह पोले ही पोले रहते हैं। है तो वह भी योग। बाप ने समझाया है वह है हठयोगी जिससे कोई प्राप्ति नहीं होती। तुम राजयोग से कितने धनवान, विश्व के मालिक बनते हो। तो तुम्हारे साइडी का पूरा भारी हो जायेगा। भक्ति क्या होता है वह भी जानना चाहिए। कहते हैं भक्ति का फल देनेवाला भगवान है। भक्ति से निष्फल होते हैं ~~भक्ति~~ इसलिये बाप आकर फल देते हैं। फिर आहिस्ते2 वह जमा किया हुआ हिसाब खलास हो जाता है। फिर बाप फल देकर भरतू कर देते हैं। तुमको बाप विश्व की बादशाही देते हैं। तुम जानते हो हम पाठशाला में बैठे हैं मनुष्य से देवता बनने को भी नई दुनिया के लिये। आगे तुम पोले2 थे। गुरु भी पोला बनाने वाले मिलते हैं जिनको वास्तव में शास्त्र आदि पढ़ने का हक भी नहीं है। अभी वह सभी हैं खाली। तुम बच्चों का हाथ भरतू हो जाता है। फिर घाटा शुरु होता है। फिर बाप आकर नया करने का रास्ता बताते हैं। भारत कितना धनवान था। जो पूज्य थे वही फिर पुजारी बने। ऐसे खाता करते गये। तमोप्रधान बनने से घाटा भी बहुत पड़ता है। इस समय तो जैसे इनसालवैन्ट बनगये हैं। वामनार्ग में जाने से फिर लायक नहीं रहते हो। अर्थ क्वैक आदि होते से सोने के महल आदि सभी नीचे चले जाते हैं। नीचे जाकर फिर समय आने पर स्वर्ग आकर खड़ा हो जाता है। जैसे नार भरता है ना। इनको भी सृष्टि का चक्र कहा जाता है। एकदम भरतू होते हो फिर कम होते2 छिवाला मार देते हो। ज्ञान रत्न खाली हो जाते हैं। फिर बाप आकर युक्ति बताते हैं। भरतू होने की। जिस बाप ने तुमको इतना धनवान बनाया उनकी ग्लानी करने लग पड़ते हो। क्योंकि रावण राज्य होता जाता है ना। इसलिये रावण का भी चित्र बना दिया है। रावण के राज्य में हो जाते हैं गधाई। बाबा नेदेखा हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं, फिर यह गदाई क्या करेंगे। अलफ को अल्लाह मिला ... गधाई को लात मार दी। बाप भी आते हैं भूत पलीतकपड़े धोने। कितना गुल2 बना देते हैं फिर लिखते हैं बाबा हम देही अभिमानी बन नहीं सकते। तो गोया गदहे का गदहे ही बन जाते हैं। वह क्या सर्विस करेंगे। योगबल का जौहर चाहिए ना। नहीं तो तीर लग न सके। (पंडित का मिसाल) उसने बोला राम राम कहने से नदी पार हो जायेंगे ... बाप भी समझाते हैं बाप में निश्चय रखो बाप को याद करो तो तुम पार हो जायेंगे। वह भी निश्चय से नदी पार हो गई। पंडित जो न सका ... यहां भी तुम बाप को याद करने से पार हो जायेंगे। जिन में देहअभिमान है वह क्या सर्विस कर सकेंगे। श्रीमत पर नहीं चलते× हैं। टीचर के मत पर स्टुडन्ट न चले तो क्या हाल होगा। माया भी बड़ी प्रबल है। देह अभिमान बड़ा जोर से आ जाता है फिर पद भी कम हो जाता। अहंकार न होना चाहिए। मैं बहुत अच्छा समझता हूं। याद की यात्रा हो नहीं तो जरूर धोखा खायेंगे। भल औरों को रास्ता बताते परन्तु खुद धोखा खायेंगे। परन्तु देह अभिमानियों को धोखे का भी डर नहींरहता। पद कितना भ्रष्ट हो जाता है यह उनको पता ही नहीं पड़ता है। जो अपने को ब्राह्मण समझते हैं, माया लड़ती भी उन से है। याद में न रहने से माया से हराते रहते हैं। देहीअभिमानी न बनने से पाप जरूर रह जायेंगे। बाबा किसको समझानी दे कि तुम सर्विस नहीं करते हो, और ही दूसरों का नुकसान करते हो तो मगर ऐसे हैं जो कहते हम सारी सर्विस को उड़ा देंगे। यह करेंगे। अन्दर में बहुत गुस्सा आता है। फिर नतीजा क्या होता है। माताएं अबलाएं जो हैं उन पर मुसीबत आ जाती है। बहुत डिससर्विस कर देते हैं। इसलिये बाप रोज समझाते रहते हैं बच्चे देहीअभिमानी भव अर्थात मनमनाभव। अपने को आत्मा नहीं समझते क्योंकि देहअभिमान पक्का है। माया कितनी प्रबल है। अच्छे2 महारथियों को भी आत्म-अभिमानी बनने नहीं देती। अच्छे2 मुरली चलाने वाले भी जाकर भूत पलीत बन पड़ती हैं। अहंकार बहुत आ जाता है। बहुत हैं जो यज्ञ से निकलते हैं फिर डिस सर्विस कर देते हैं। माया जीत पहनलेती है उन पर। आगे चल माया तो और ही जबरदस्त बनेगी। गिराती रहेगी, अहंकार तोड़ती रहेगी। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।